بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-29.03.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पवित्र एवं विवेक शील कथनों के प्रकाश में दुआ के यथार्थ, वास्तविकता, क़ुबूलियत एवं दर्शन शास्त्र का बयान।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्सिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 29 मार्च 2024, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः तथा सूरः अलबक़रा की आयत 187 की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्सिहिल अज़ीज़ ने उपरोक्त आयते करीमा का अनुवाद पेश करते हुए फ़रमाया- और जब मेरे बन्दे तुझसे मेरे विषय में सवाल करें तो निश्चित ही मैं निकट हूँ। मैं दुआ करने वाले की दुआ का जवाब देता हूँ, जब वह मुझे पुकारता है। अतएव चाहिए कि वे भी मेरी बात पर लब्बैक कहें तथा मुझ पर ईमान लाएँ ताकि वे हिदायत पाएँ। अल्लाह तआला ने यह आयत रोज़ों के निर्देशों के बाद रखी है, बल्कि कह सकते हैं बीच में रखी है। इससे पता चलता है कि रमज़ान का दुआओं के साथे विशेष सम्बंध है। रमज़ान में अल्लाह तआला की एक विशेष प्यार भरी दृष्टि होती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं अपने बन्दे की धारणा के अनुसार उसके साथ व्यवहार करता हूँ। जिस समय बन्दा मुझे याद करता है, मैं उस समय उसके साथ होता हूँ। यदि वह मुझे दिल में याद करे तो मैं दिल में उसे याद करता हूँ .... यदि वह चल कर मेरी ओर आए तो मैं उसकी ओर दौड़ कर जाऊँगा। अतः अल्लाह तआला तो सामान्य परिस्थितियों में भी बन्दे से ऐसा सलूक फ़रमाता है, तो रमज़ान में ख़ुदा कितना उपकार करने वाला होगा उसका हम अनुमान भी नहीं लगा सकते, परन्तु शर्त यह है कि ये सारी बातें दिल की गहराई से हों।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला अति लज्जापूर्ण, अति दयालु एवं अति दानशील एवं उदार है। जब बन्दा दोनों हाथ उसकी ओर उठाता है तो वह उसे ख़ाली तथा निराश होकर वापस करते हुए शर्माता है। अतः हम कई बार जल्दी बाज़ी से कह देते हैं कि हमने दुआ मांगी किन्तु दुआ क़बूल न हुई परन्तु अपनी स्थिति को नहीं देखते कि कितना सत्य पूर्ण हृदय है। अल्लाह तआला को धोखा नहीं दिया जा सकता। वह तो हमारे दिल का हाल जानता है। अल्लाह तआला के खुले द्वार म दाख़िल होने के लिए उसकी अनिवार्य शर्तें पूरी करनी होंगी। इस आयत में जो फ़रमाया कि 'मेरे बन्दे' तो इसका अभिप्रायः है कि वे बन्दे जो वास्तव में अल्लाह के बन्दे बनना चाहते हैं, रमज़ान में इस काम के लिए विशेष वातावरण उपलब्ध है। जब इस वातावरण से लाभान्वित होकर ऐसी हालत होगी तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरे ऐसे बन्दों तथा मुझसे इश्क़ करने वालों से कह दो कि मैं दुआएँ सुनता हूँ और उनका जवाब भी देता हूँ। अल्लाह तआला ने स्पष्ट फ़रमाया है कि केवल ज़बानी मुहब्बत के दावे काफ़ी नहीं बल्कि तुम्हें मेरे आदेशों के अनुसार चलना पड़ेगा, अल्लाह और उसके बन्दों के अधिकार अदा करने होंगे, ईमान में मज़बूती पैदा करनी होगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दुआ की वास्तविकता, यथार्थ, क़बूलियत तथा उसका दर्शन शास्त्र बड़े विस्तार के साथ बयान फ़रमाया है। आप अलै. फ़रमाते हैं- ख़ुदा के अस्तित्व का प्रमाण क्या है? तो इसका जवाब यह है कि मैं अति निकट हूँ अर्थात कुछ बड़े प्रमाणों की आवश्यकता नहीं है, मेरा वजूद अत्यंत निकटता के भाव से समझ में आ सकता है तथा अत्यंत सरलता पूर्वक मेरे अस्तित्व का प्रमाण उत्पन्न होता है तथा वह प्रमाण यह है कि जब कोई दुआ करने वाला मुझे पुकारे तो मैं उसकी पुकार को सुनता हूँ। आप अलै. आगे फ़रमाते हैं कि यदि सवाल हो कि ख़ुदा के वजूद का ज्ञान कैसे हो? तो उसका जवाब यह है कि इस्लाम का ख़ुदा अति निकट है यदि कोई उसे सच्चे दिल से बुलाता है तो वह जवाब देता है। दूसरे सम्प्रदायों (अर्थात धर्मों) के ख़ुदा निकट नहीं हैं बल्कि इतने अधिक दूर हैं कि उनका पता ही नहीं चलता। फ़रमाया- यदि यह कहो कि हम पुकारते हैं परन्तु जवाब नहीं मिलता तो देखो, यदि तुम एक जगह खड़े होकर एक ऐसे व्यक्ति को जो तुमसे बहुत दूर है, पुकारते हो तथा तुम्हारे अपने कानों में कोई दोष है, अल्लाह तआला जवाब दे भी दे तो क्यूँकि तुम्हारे ईमान में मज़बूती नहीं है, तुम्हारी मुहब्बत में कमी है, उसकी बातों पर अमल नहीं कर रहे। यह बहरापन तुम्हारे कानों का है जिसके कारण तुम उसकी आवाज़ को सुन नहीं सकते।

फ़रमाया- दुआ ख़ुदा तआला के अस्तित्व का बहुत बड़ा सबूत है। दुआ बड़ी दौलत एवं शक्ति है। अम्बिया अलैहिस्सलाम के जीवन की जड़ तथा उनकी सफलता का मूल एवं सच्चा माध्यम यही दुआ है। फ़रमाया- मैं नसीहत करता हूँ कि अपनी ईमानी तथा अमली शक्ति को बढ़ाने के लिए दुआओं में लगे रहो। दुआओं के माध्यम से ऐसे बदलाव होगा कि अन्तिम समय शुभ हो जाएगा। दुआ के विवेक की वास्तविकता के सम्बंध में आप अलै. फ़रमाते हैं कि मअरिफ़त अर्थात ब्रह्मज्ञान कृपा के माध्यम से प्राप्त होता है तथा फिर कृपा के द्वारा ही शेष रहता है। कृपा मअरिफ़त को अत्यंत स्वच्छ एवं उज्जवल कर देती है। यह विचार मत

करो कि हम भी हर दिन दुआ करते हैं तथा पूरी नमाज़ दुआ ही है क्यूँकि वह दुआ जो मअरिफ़त के बाद तथा कृपा के द्वारा मिलती है वह और रंग एवं दशा रखती है। वह फ़ना करने वाली चीज़ है, वह भस्म कर देने वाली आग है, वह रहमत को खींचने वाली एक चुम्बकीय शक्ति है, वह मौत है परन्तु अन्ततः जीवन देती है। दुआ ख़ुदा से आती है तथा ख़ुदा की ओर ही जाती है। दुआ से ख़ुदा इतना निकट हो जाता है जैसे कि तुम्हारी आत्मा तुम्हारे निकट है। फ़रमाया- अल्लाह जल्ला शानुह ने जो द्वार अपने प्राणियों की भलाई के लिए खोला है, वह एक ही है अर्थात दुआ। जब कोई व्यक्ति दर्द एवं व्याकुलता से उस द्वार में दाख़िल होता है तो वह मौलाए करीम उसको पवित्रता एवं शुद्धता की चादर पहना देता है तथा अपनी महानता का ग़ल्बः उसपर इतना अधिक कर देता है कि व्यर्थ के कामों तथा बेकार की हरकतों से वह कोसों दूर भाग जाता है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- अर्थात वह व्यक्ति केवल सांसारिक बातों के लिए दुआ नहीं करता बल्कि तक़्वा एवं पवित्रता प्राप्ति के लिए दुआ करता है और यही एक मोमिन की निशानी है। फिर दुआ की गहराई को और अधिक स्पष्ट करते हुए आप अलै. एक जगह आगे फ़रमाते हैं कि कृपाओं की प्राप्ति का निकटतम मार्ग दुआ है तथा दुआ क मूल रूप के लिए अनिवार्य बातें ये हैं कि उसम दर्द हो, व्याकुलता हो, विनयता हो। जो दुआ विनम्रता, व्याकुलता तथा टूटे हुए दिल से भरी हो, वह ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल को खींच लाती है। फ़रमाया- यह भी ख़ुदा ताअला की कृपा के बिना प्राप्त नहीं हो सकता। इसका इलाज यही है कि दुआ करता रहे चाहे कैसा ही दिल उचाट तथा रूचि से रिक्त हो जाए। फ़रमाया- जो रात को उठता है चाहे कितनी ही बेदिली तथा धैर्य हीन स्थिति हो किन्तु यदि वह उस अवस्था में भी दुआ करता है कि इलाही! दिल तेरे अधिकार में तथा आधीन है, तू उसको शुद्ध कर दे तथा पूरी आधीनता की अवस्था म उसके साथ जोड़ चाहता है तो उस आधीनता में से ही संयुक्तता निकल आएगी तथा दर्द पैदा हो जाएगा। वह देखेगा कि उस समय आत्मा अल्लाह के द्वार पर पानी के समान बहती है। फ़रमाया- दुआ एक ऐसी चीज़ है जो हर कठिनाई को सरल बना देती है। लोगों को दुआ के मूल्य एवं महत्त्व का ज्ञान नहीं है वे बहुत जल्दी निराश हो जाते हैं तथा साहस त्याग कर छोड़ बैठते हैं, जबकि दुआ एक प्रकार के निरन्तर भाव एवं स्थाइत्व को चाहती है। इसके लिए संघर्ष एवं निष्ठा शर्त है जो दुआ से ही पैदा होती है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इसके लिए हमें अपने दिल टटोलने की आवश्यकता है कि क्या यह निष्ठा की स्थिति हममें पैदा हो गई है अथवा हम पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं? फिर दुआ का दर्शन शास्त्र बयान करते हुए हुज़ूर अलै. फ़रमाते हैं- इंसान को चाहिए कि इस जीवन को अत्यधिक कुरूप मान कर इससे निकलने की कोशिश करे तथा दुआ से काम ले, क्यूँकि जब वह युक्तिपूर्ण कार्य पद्यति के माध्यम से काम करता है तथा फिर सच्ची दुआओं से काम लेता है तो अन्ततः अल्लाह तआला उसको मुक्ति दे देता है तथा वह पापी जीवन से निकल आता है क्यूँकि दुआ भी कोई मूल्य हीन चीज़ नहीं है बल्कि वह भी एक मौत ही है। जब इस मौत को इंसान क़बूल कर लेता है तो अल्लाह तआला उसको अपराधिक जीवन से जो मृत्यु का कारण है, बचा लेता है तथा उसको एक पवित्र जीवन प्रदान करता है। फ़रमाया- अतएव चाहिए कि रातों को उठ उठ कर अत्यंत विनयता एवं दर्द के साथ तथा निवेदन के साथ ख़ुदा तआला के समक्ष अपने

कष्टों को पेश करे तथा इस दुआ को उस सीमा तक पहुंचावे कि एक मौत के समान स्थिति प्रकट हो जावे, उस समय दुआ क़बूलियत के स्तर को पहुंचती है।

फ़रमाया- यह भी याद रखो कि सबसे पहले तथा सबसे महत्त्व पूर्ण बात यह है कि इंसान अपने आपको गुनाहों से पाक साफ़ करने की दुआ करे। सारी दुआओं का मूल आधार तथा मूल अंश यही है क्यूँकि जब यह दुआ क़बूल हो जाए तथा इंसान हर प्रकार के मैल कुचैल तथा बुराईयों से पाक साफ़ हो होकर ख़ुदा तआला की दृष्टि में पवित्र हो जाएगा तो फिर दूसरी दुआएँ जो उसकी मूल आवश्यकताओं के विषय में होती हैं, वे उसको मांगनी भी नहीं पड़तीं तथा वे अपने आप पूरी हो जाती हैं। दुआ की क़बूलियत के लिए क्या हालत होनी चाहिए, इसके विषय में आप अलै. फ़रमाते हैं- दुआ के अन्दर क़बूलियत का प्रभाव उस समय पैदा होता है जब वह अत्यंत उच्च व्याकुलता के स्तर तक पहुंच जाती है। यह छोटी सी बात नहीं है बल्कि महामान्य वास्तविकता है, बल्कि सच तो यह है कि जिसको ख़ुदाई का जलवा देखना हो, उसे चाहिए कि दुआ करे। निरन्तरता के साथ दुआ करते चले जाने के सम्बंध में आप अलै. फ़रमाते हैं- दुआ करते समय बेदिली तथा घबराहट से काम नहीं लेना चाहिए तथा जल्दी ही थक कर नहीं बैठ जाना चाहिए बल्कि उस समय तक हटना नहीं चाहिए जब तक दुआ अपना पूरा प्रभाव न दिखाए, जो लोग थक जाते हैं तथा घबरा जाते हैं वे ग़लती करते हैं क्यूँकि यह वंचित रह जाने की निशानी है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- हमें इन दिनों में जबकि अल्लाह तआला ने विशेष रूप से यह बरकत का महीना हमारे लिए उपलब्ध किया है, अपने अन्दर पाक बदलाव पैदा करते हुए दुआओं की ओर ध्यान देना चाहिए। यही हमारी दुनिया व आख़िरत संवारने का साधन है। रमज़ान का अन्तिम दशक है इसमें विशेष रूप से हमें अल्लाह तआला के आदेशों को अपने जीवन की कार्य-पद्यति बनाते हुए, ईमान में मज़बूत होते हुए, रातों को उठ कर उसके समक्ष झुक कर उसकी निकटता को प्राप्त करने का पयास करना चाहिए।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने रमज़ान के हवाले से दुआओं की तहरीक करते हुए जमाअत की उन्नतियों, यमन के बन्दी बनाए गए अहमदियों तथा मध्य पूर्व के पीड़ितां के लिए दुआ की प्रेरणा दी।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131